7A - हिन्दी शिक्षण शास्त्र
Pedagogy of Hindi

## * हिन्दी शिक्षण के उद्देश्य *

राष्ट्र के पुनर्निर्माण के कार्य में भाषा की शिक्षा का विशेष महत्व है। भाषा के माध्यम से छात्र ज्ञान-विज्ञान के अनेकानेक विषयों का अध्ययन करता है। यदि छात्र का अधिकार भाषा पर नहीं होता तो वह ज्ञान के अन्य क्षेत्रों में भी प्रगति नहीं कर पाता। भाषा ही हमारे चिन्तन का आधार है। किसी भी जनतन्त्र की सफलता उसके नागरिकों के चिन्तन पर निर्भर करती है और इस चिन्तन में भाषा की सबल भूमिका रहती है। भारतीय गणराज्य के सात राज्यों में छात्रों की मातृ भाषा हिन्दी है और अन्य राज्यों में इसका स्थान राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा के रूप में द्वितीय भाषा का होता है। जिन राज्यों में हिन्दी मातृभाषा के रूप में व्यवहृत है वहाँ के लोगकायह विशेष कर्तव्य है कि वे छात्रों के भाषा-ज्ञान को बढ़ायें और उन्हें इस बात की प्रेरणा दें कि वे हिन्दी पर अधिकार प्राप्त कर सकें।

## * हिन्दी-शिक्षण के सामान्य उद्देश्य *

① शुद्ध, सरल, स्पष्ट एवं प्रभावशाली भाषा में छात्र अपने भावों, विचारों एवं अनुभूतियों की अभिव्यक्ति कर सकें।

② छात्रों को इस योग्य बनाना कि वे उचित भावों, भंगिमाओं के साथ वाचन करके काव्य कला एवं अभिनय कला का आनन्द





Scanned with CamScanner

प्राप्त कर सके और साथ ही अपने मानसिक सुख-दुःखात्मक भावनाओं के प्रति सन्तुष्टि प्राप्त कर सकें।

③ ज्ञान प्राप्त करने और मनोरंजन के लिए पढ़ना-लिखना, सिखाना, गद्य-पद्य में निहित आनन्द और चमत्कार से परिचय प्राप्त कराना, पुस्तकों में निहित ज्ञान-भण्डार का अवलोकन कराना तथा बालक की स्वाध्यायशीलता के प्रति रुचि उत्पन्न करना मातृभाषा शिक्षण के महत्वपूर्ण उद्देश्य है।

④ क्रमबद्ध विचार-प्रणाली और भावाभिव्यंजन में दक्ष बनाना।

⑤ बालकों के शब्दों, वाक्यांशों तथा लोकोक्तियों आदि के कोष में वृद्धि करना।

⑥ उनको शुद्धता एवं गति का निरन्तर विकास करते हुए वाचन का अभ्यास कराना।

⑦ ज्ञान-क्षेत्र तथा विवेक का निरन्तर विकास करते हुए चरित्र-निर्माण कराना।

⑧ विभिन्न शैलियों का परिचय कराकर अपनी उपयुक्त शैली के विकास में सहायता करना।

⑨ उन्हें सत्साहित्य के सृजन की प्रेरणा देना जिससे वे अपने अवकाश के समय के सदुपयोग द्वारा अपने व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन को सुसंस्कृत एवं सुखी बना सकें।

(10) बालकों को मानव-स्वभाव एवं चरित्र के अध्ययन का अवसर प्रदान करना।

(11) उन्हें भावानुकूल भाषा-प्रयोग, स्वर-निर्माण एवं अंग-संचालन की कला का अभ्यास कराना।

उपर्युक्त उद्देश्यों से स्पष्ट होता है कि इनमें से कुछ उद्देश्य ज्ञानात्मक है तो कुछ कौशलात्मक कुछ रसात्मक एवं सृजनात्मक है तो कुछ का सम्बन्ध अभिवृत्तियों से है। इस प्रकार इन उद्देश्यों को निम्नलिखित पांच वर्गों में रख सकते है—

(i) ज्ञानात्मक
(ii) कौशलात्मक
(iii) रसात्मक
(iv) सृजनात्मक
(v) अभिवृत्यात्मक

* हिन्दी भाषा शिक्षण के गुण *



बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, दिल्ली, राजस्थान, हरियाणा, उत्तराखण्ड, हिमाचल प्रदेश आदि सभी प्रान्तों में हिन्दी बोली, समझी और लिखी जाती है। हिन्दी सबसे अधिक प्रयुक्त होने वाली भाषा है सभी प्रदेशों के निवासी सरलता से बोधगम्य कर लेते है। हिन्दी भाषा के गुण निम्न है—

① हिन्दी भाषा शिक्षण में सुसम्बद्धता अथवा क्रम का होना आवश्यक है। कोई बात कही जाय तो उसमें एक तर्कसम्मत क्रम होना चाहिए। तभी पता चलेगा कि कहने वाला क्या कहना चाहता है।

② हिन्दी भाषा शिक्षण में कहावतों, चुटकुलों, व्यंग्य विनोद और हँसी-मजाक का विशिष्ट स्थान होता है।

③ स्वाभाविकता एक महत्वपूर्ण गुण है।

④ हिन्दी शिक्षण के प्रमुख दो घटक हैं— हिन्दी भाषा शिक्षण और हिन्दी साहित्य शिक्षण। हिन्दी भाषा शिक्षण में भाषा विज्ञान, व्याकरण और भाषा कौशल का समावेश होता है।

⑤ हिन्दी भाषा शिक्षण का क्षेत्र अधिक व्यापक है: जिसे भाषा विज्ञान कहते हैं। भाषा विज्ञान में ये विज्ञान समाहित हैं — प्रोक्ति विज्ञान, वाक्य विज्ञान, अर्थ विज्ञान, रूप विज्ञान, शब्द विज्ञान, ध्वनि विज्ञान और लिपि विज्ञान।

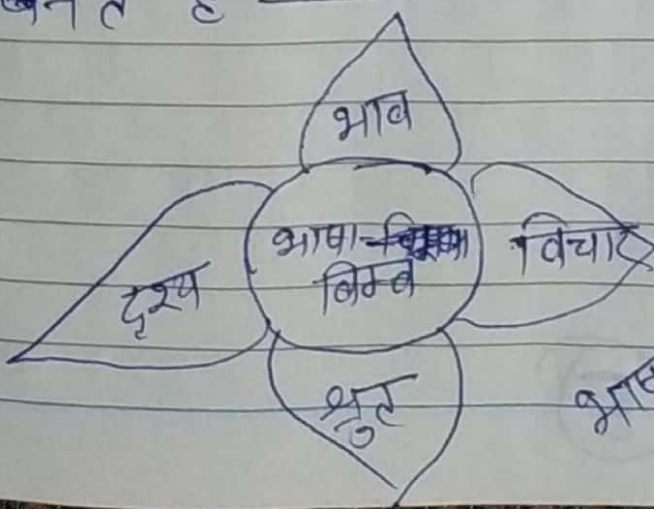

⑥ हिन्दी भाषा शिक्षण से मस्तिष्क में चार प्रकार के भाषा बिम्ब बनते हैं —




भाषा शिक्षण प्रक्रिया से मस्तिष्क में बिम्बों का निर्माण स्थायी हो जाता है।

(1) भाषा शिक्षण के लिए भाषा के प्रति अभिरुचि होना आवश्यक है। बिना अभिरुचि के बालक को सिखाया नहीं जा सकता।

(2) हिन्दी भाषा शिक्षण में रुचि उत्पन्न करने के लिए पाठ्य-सहगामी क्रियाकलापों की रचनात्मक भूमिका होती है:—
(i) भ्रमण
(ii) अवलोकन
(iii) प्रार्थना सभा
(iv) बाल सभा.
(v) प्रतियोगिताएं
(vi) भाषायी खेल।



Scanned with CamScanner